आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:25-11-14

हम बच्चों को हद और बेहद की सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर, सारी सृष्टि की हद-बेहद से पार ले जाने वाले, मुक्तिदाता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाबा की दृष्टि हद और बेहद से पार जाती है, तुम्हें भी हद (सतयुग), बेहद (कलियुग) से पार जाना है.

आज बाबा ने मुरली में सारी सृष्टि चक्र को दो भागों में बांट-कर हमें हद और बेहद से भी पार मुक्तिधाम-शांतिधाम में अपनी बुद्धि को स्थित करने की ड्रिल कराई हैं.

बाबा ने हमें समझाया है कि यह सारा सृष्टि चक्र ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का बना हुआ है. सारा चक्र हद और बेहद में घुमता रहता है. बाबा तो हद और बेहद से पार रहते है. अभी हम आत्माये भी ज्ञान और भक्ति से गुजर-कर वैराग्य में आये है. यह वैराग्य हमें नई और पुरानी दुनिया से पार, बाबा के पास अपने घर, परमधाम ले जाता है.

आज की बाबा की मुरली से सृष्टि चक्र पर कहे गये महा-वाक्यों को याद कर अपनी बुद्धि को परमधाम में टिकाने का अभ्यास करेंगे.

बाबा कहते है सारी सृष्टि चक्र का खेल चलता है, ज्ञान, भक्ति और वैराग्य से. ज्ञान को कहा जाता है दिन, जबकि नई दुनिया है. वह है हद की दुनिया क्योंकि वहॉ बहुत थोड़े होते हैं. फिर आहिस्ते-आहिस्ते वृद्धि होती है. आधा समय बाद भक्ति शुरु होती है. फिर बाद में सृष्टि की वृद्धि होती है. ऊपर से आत्माये आती जाती हैं. सारी सृष्टि हद से शुरु होती है, फिर बेहद में जाती है. हद में कितने थोड़े बच्चे होते हैं फिर रावण राज्य में कितनी वृद्धि हो जाती है. बाप की तो हद और बेहद से पार दृष्टि जाती है. तुमको भी अब हद और बेहद से पार जाना है.

बाबा कहते है सतयुग में कितनी छोटी दुनिया है. बाद में द्वापर से लेकर फिर और धर्म शुरु होते हैं. सन्यास धर्म भी द्वापर से शुरु होता है. भक्ति भी द्वापर से शुरु होती है. जब ज्ञान है तो भक्ति नहीं और जब भक्ति है तो ज्ञान नहीं. ज्ञान माना सतयुग-त्रेता सुख. भक्ति माना अज्ञान और दुख. अब तुम्हें सुख और दुख से पार जाना हैं. हद-बेहद से पार. तुमको यह समझाने वाला स्वयं बाप है जो बाप हद और बेहद से पार है. तुम्हें सारी रचना के आदि-

मध्य-अंत का राज (razz) समझाते हैं फिर कहते है इससे भी पार जाओ. जहॉ यह सुख-दुख कुछ भी नहीं है. शान्ति ही शान्ति हैं.

बाबा कहते है मैं हद को भी जानता हूँ, बेहद को भी जानता हूँ. मुझमें ही सारी सृष्टि चक्र का ज्ञान हैं. बाप की दृष्टि जाती है सतयुग की हद तरफ. फिर कलियुग के बेहद तरफ. फिर बाप तुम्हें पार ले जाते है जहॉ कुछ नहीं. सूर्य चांद के भी ऊपर ले जाते है जहॉ हमारा शान्तिधाम, स्वीटहोम है. फिर सतयुग में आते है उसे भी स्वीटहोम कहा जाता है. वहॉ शान्ति भी है तो राज्य-भाग्य सुख भी है - दोनों ही हैं. अभी बाप के साथ तुम शान्ति भी स्थापन कर रहे हो और सुख-शान्ति भी स्थापन कर रहे हो.

बाबा कहते है आधाकल्प तुम्हारा राज्य चलता है फिर आधाकल्प के बाद रावण का राज्य आता है. २५०० वर्ष तुम राज्य करते हो फिर २५०० वर्ष बाद रावण राज्य होता है. बाप तुम्हें हद और बेहद का दोनों राज (razz) समझाते हैं. फिर उनसे पार, वह है तुम्हारे रहने का स्थान, जिसको ब्रह्मांड भी कहते हैं. अब बाप तुम्हें अपने घर ले जाते हैं. वहॉ से फिर सतयुग के आदि में तुम्हें पार्ट बजाने फिर आना है.

अंतिम पुरुषार्थ ----- बाबा के साथ जाना है, फिर सतयुग में श्रीकृष्ण के साथ आना है.

ॐ शांति.